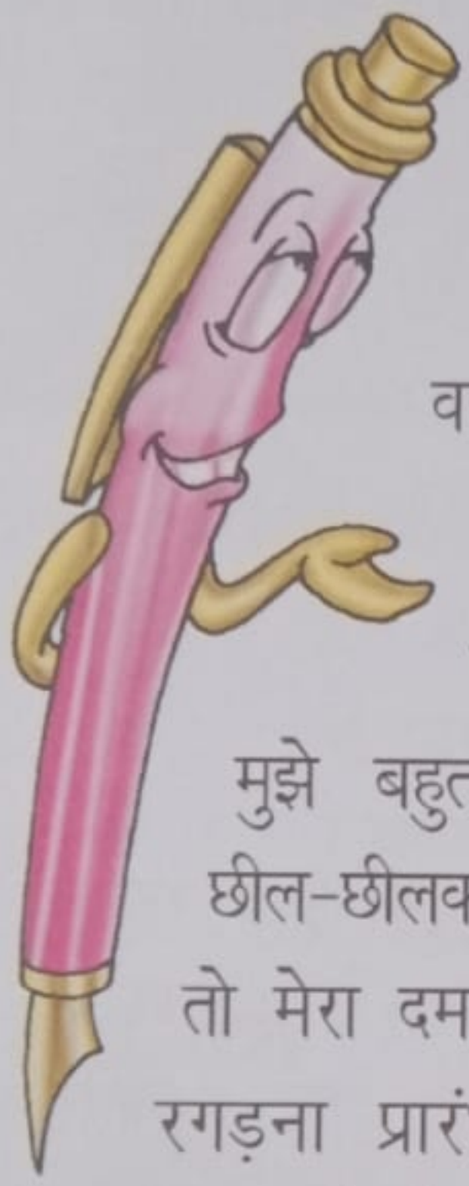

मैं लेखनी हूँ, मेरा दूसरा नाम है- 'कलम'। अँगरेज़ों ने मेरा नाम 'पेन' रख दिया। अब तो ज़्यादातर लोग मुझे पेन ही कहकर पुकारते हैं। मैं देखने में छोटी ज़रूर हूँ लेकिन मेरा काम बहुत बड़ा है। समाज के सभी वर्ग, चाहे डॉक्टर हों या वकील, बाबू हों या विद्यार्थी, यहाँ तक कि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सभी मुझे अपने हृदय से लगाए रखते हैं।

मुझे याद है, जब मुझे अपने मातृ पौधे से काटकर अलग कर दिया गया था, तब मुझे बहुत कष्ट हुआ था। इतना ही नहीं, मनुष्य ने मेरा सिर काट दिया और छील-छीलकर मुझे नुकीला बना दिया। फिर मुझे लाल, नीली, हरी स्याही में डुबो दिया। वहाँ तो मेरा दम ही घुटने लगा। फिर मनुष्य ने मेरा मुख बाहर निकाला और मुझे कागज़ पर रगड़ना प्रारंभ कर दिया। मैंने बहुत दुख सहन किया। अपनी सुविधानुसार मनुष्य ने मेरा स्वरूप भी खूब बदला है। कभी रबर की थैली में स्याही भरकर मेरे पेट में घुसा दी तो कभी प्लास्टिक की रिफ़िल मेरे हृदय में चुभो दी। अपना काम पूरा होते ही स्वार्थी मनुष्य मेरे मुख पर कसकर ढक्कन लगा देता है। कभी अपनी जेब में मुझे सिर के बल खड़ा कर देता है। मैं सारी यातनाएँ चुपचाप सहन करती हूँ क्योंकि लोगों की भलाई करना मेरा कर्त्तव्य है।

बच्चो! यदि मैं दुनिया में न होती तो तुम्हारे उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, निबंध, इतिहास और कोश आदि कैसे लिखे जाते? मेरे ही कारण तुम लोग आज मनचाहे विषय पढ़ते हो। मैंने मनुष्यों की

उपर्युक्त गद्यांश में से दिए गए प्रश्नों का उत्तर चुनो -

(क) लेखनी को कौन-कौन हृदय से लगाए रखते हैं?

(ख) लेखनी ने किन-किन दुखों को सहन किया है?

(ग) लेखनी का क्या कर्तव्य है?

(घ) लेखनी से क्या-क्या लिखे जाते हैं?

(ङ) ऊपर के दिए गए गद्यांश का एक सही शीर्षक चुनो।